SKU शोध संचार

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

# भारतीय मां : बहुआयामी शक्तिपुंज

[1]डॉ. भक्ति अग्रवाल
[2]डॉ. आलोक अग्रवाल
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर म.प्र.

**सारांश**

इस शोध पत्र में भारतीय मां की भूमिका, उसका सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक योगदान, तथा उसकी बहुआयामी शक्ति पर गहन अध्ययन किया गया है। भारतीय समाज में मां केवल एक जन्मदात्री नहीं, बल्कि परिवार और समाज के नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की संरक्षक भी है। मां का व्यक्तित्व भारतीय समाज में शक्ति, प्रेम, समर्पण, और त्याग का प्रतीक माना गया है। भारतीय मां की यह शक्ति केवल पारिवारिक सीमा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव भारतीय समाज, संस्कृति, और धर्म के गहन आयामों तक फैला हुआ है। इस शोध पत्र में मां के इस बहुआयामी व्यक्तित्व को समझने का प्रयास किया गया है।

**कुंजीभूत शब्द**

मां, सांस्कृतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, प्रेम, भारतीय।

## 1. प्रस्तावना

भारतीय समाज में मां का स्थान अत्यधिक आदर और सम्मान का है। भारतीय संस्कृति में मां को देवी के समान माना गया है, जो न केवल शारीरिक रूप से जीवन देने वाली होती है, बल्कि वह अपने परिवार, समाज और संपूर्ण राष्ट्र की आधारशिला भी होती है। मां की भूमिका केवल एक देखभाल करने वाली नहीं होती, बल्कि वह एक मार्गदर्शक, शिक्षक, संरक्षक, और समाज की नैतिक संरचना की धुरी भी होती है। इस शोध पत्र में हम मां के इस बहुआयामी व्यक्तित्व पर गहराई से विचार करेंगे।

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

**2. भारतीय मां की सांस्कृतिक भूमिका**

भारतीय समाज में मां का सांस्कृतिक महत्व अति प्राचीन है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक समय तक, मां की छवि भारतीय संस्कृति में शक्ति और समर्पण की मूर्ति रही है। मातृत्व भारतीय संस्कृति में केवल जैविक प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अवधारणा भी है।

1. **मातृत्व और देवी:** भारतीय धर्मों में मां को देवी का स्वरूप माना जाता है। देवी दुर्गा, पार्वती, सरस्वती, और लक्ष्मी की पूजा मां के रूप में की जाती है। ये देवियाँ केवल मातृत्व का प्रतिनिधित्व नहीं करतीं, बल्कि वे शक्ति, ज्ञान, और समृद्धि की प्रतीक भी हैं।
2. **लोक साहित्य और मां:** भारतीय लोक साहित्य में मां का चित्रण त्याग, बलिदान और प्रेम के रूप में किया गया है। रामायण, महाभारत और अन्य धार्मिक ग्रंथों में मां की भूमिका महत्वपूर्ण है। कैकेयी, कुंती, गांधारी, और माता सीता जैसी पात्रों के माध्यम से मातृत्व का आदर्श प्रस्तुत किया गया है।

**3. भारतीय मां का पारिवारिक योगदान**

भारतीय मां को परिवार की धुरी माना जाता है। परिवार की देखभाल, पालन-पोषण, और बच्चों के नैतिक और सांस्कृतिक विकास में उसकी भूमिका अहम होती है। पारिवारिक संरचना में मां का योगदान निम्नलिखित पहलुओं से देखा जा सकता है।

1. पालन-पोषण और संस्कार: भारतीय मां अपने बच्चों को संस्कार और नैतिक मूल्यों की शिक्षा देती है। वह केवल भौतिक रूप से बच्चों का पोषण नहीं करती, बल्कि उनके मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
2. त्याग और समर्पण: मां का त्याग और समर्पण भारतीय पारिवारिक जीवन का अभिन्न हिस्सा है। वह परिवार के प्रत्येक सदस्य की भलाई के लिए अपने सुख-दुख की परवाह किए बिना काम करती है।

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

3. शिक्षक और मार्गदर्शक: भारतीय मां अपने बच्चों की पहली शिक्षक होती है। वह उन्हें जीवन की प्राथमिक शिक्षा, नैतिकता, और सामाजिक जिम्मेदारियों से परिचित कराती है।

**4. भारतीय मां की सामाजिक भूमिका**

मां की भूमिका परिवार तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज की नैतिक संरचना और सामाजिक संतुलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समाज में मां का योगदान और उसकी भूमिका निम्नलिखित रूप से देखी जा सकती है।

1. **सामाजिक मूल्य और नैतिकता:** भारतीय मां समाज में नैतिकता और सदाचार का संचार करती है। वह बच्चों को सही और गलत का भेद सिखाती है और समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारियों से अवगत कराती है।
2. **समाज की धुरी:** भारतीय समाज में महिलाएँ, विशेषकर मांएं, समाज की धुरी मानी जाती हैं। वे अपने बच्चों और परिवार के माध्यम से सामाजिक मूल्यों का प्रसार करती हैं।
3. **समाज सुधार में मां की भूमिका:** इतिहास में कई भारतीय महिलाओं ने समाज सुधार और स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनमें झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, माता साहिब कौर, सावित्रीबाई फुले आदि उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने समाज सुधार और स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया।

**5. भारतीय मां की आर्थिक भूमिका**

भारतीय समाज में मां की आर्थिक भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, जहां महिलाएँ घर के साथ-साथ कृषि कार्यों में भी योगदान देती हैं। बदलते समय के साथ, शहरी क्षेत्रों में भी महिलाएँ अब पेशेवर जीवन में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। मां की आर्थिक भूमिका निम्नलिखित रूप से देखी जा सकती है।

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

1. **घरेलू प्रबंधन और बजट:** भारतीय मां घर के आर्थिक प्रबंधन में अहम भूमिका निभाती है। वह परिवार की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए बजट तैयार करती है और खर्चों का संतुलन बनाए रखती है।
2. **कार्यरत महिलाएँ और मां:** आधुनिक समय में भारतीय महिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रही हैं। मां का कार्य जीवन और पारिवारिक जीवन के बीच संतुलन बनाए रखना चुनौतीपूर्ण होता है, लेकिन वह इस भूमिका को बखूबी निभाती है।
3. **स्वरोजगार और महिला उद्यमिता:** भारतीय मांएं स्वरोजगार और छोटे उद्योगों के माध्यम से भी आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त कर रही हैं। महिलाएँ विभिन्न हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग, और स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से अपने परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार कर रही हैं।

**6. भारतीय मां और धर्म**

भारतीय समाज में धर्म का महत्वपूर्ण स्थान है, और मां का धर्म के प्रति समर्पण और बच्चों को धार्मिक संस्कार देने में महत्वपूर्ण योगदान होता है। धर्म और अध्यात्म में मां की भूमिका निम्नलिखित रूप से देखी जा सकती है।

1. **धार्मिक अनुष्ठान और संस्कार:** भारतीय मां अपने परिवार में धार्मिक संस्कारों और परंपराओं का पालन करती है। वह बच्चों को धर्म और अध्यात्म से जोड़ने का कार्य करती है।
2. **आध्यात्मिक शिक्षाएँ:** मां बच्चों को धार्मिक ग्रंथों, पूजा-पाठ, और आध्यात्मिक जीवन से अवगत कराती है। भारतीय घरों में मां बच्चों को महाभारत, रामायण, भगवद्गीता, और उपनिषदों की शिक्षाएँ सिखाती है।
3. **धर्म और मातृत्व का संबंध:** भारतीय धर्मों में मां को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। मां को सृष्टि की जननी और पालनकर्ता के रूप में देखा गया है, जो धर्म और आध्यात्मिकता का प्रतीक है।

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

**7. मां के संघर्ष और चुनौतियाँ**

भारतीय मां के जीवन में कई संघर्ष और चुनौतियाँ होती हैं, जिन्हें वह धैर्य, साहस, और समर्पण से पार करती है। इन चुनौतियों में आर्थिक, सामाजिक, और भावनात्मक पहलुओं के साथ-साथ पारिवारिक जिम्मेदारियाँ भी शामिल होती हैं। मां के सामने आने वाली कुछ प्रमुख चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं।

1. **कार्य-जीवन संतुलन:** आधुनिक समय में कामकाजी मांओं को अपने कार्य जीवन और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाए रखना होता है।
2. **पारिवारिक दबाव:** भारतीय समाज में मां पर पारिवारिक दबाव अधिक होता है, जहाँ उसे अपने परिवार के हर सदस्य की देखभाल करनी होती है।
3. **आर्थिक और सामाजिक असमानता:** ग्रामीण और गरीब परिवारों में मां को आर्थिक तंगी और सामाजिक असमानता का सामना करना पड़ता है, जो उसके जीवन को और अधिक चुनौतीपूर्ण बनाता है।

**8. भारतीय मां और आधुनिकता**

आधुनिक समय में भारतीय मां का व्यक्तित्व और भूमिका बदलते समय के साथ नए आयाम ग्रहण कर रही है। आधुनिक समाज में शिक्षा, तकनीक, और वैश्वीकरण ने मां की भूमिका को और अधिक जटिल बना दिया है। हालांकि, आधुनिकता ने मां के लिए नए अवसर और चुनौतियाँ दोनों प्रस्तुत किए हैं।

1. **शिक्षा और करियर:** आधुनिक भारतीय मांएं शिक्षित हैं और वे विभिन्न पेशेवर क्षेत्रों में काम कर रही हैं। वे अपने बच्चों के लिए एक आदर्श और प्रेरणास्रोत बन रही हैं।
2. **तकनीकी युग में मां की भूमिका:** आज के डिजिटल युग में मांएं तकनीक का इस्तेमाल कर अपने बच्चों की शिक्षा और देखभाल में सहायक बन रही हैं। वे बच्चों के ऑनलाइन अध्ययन, करियर मार्गदर्शन, और अन्य गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

3. **मां और महिला सशक्तिकरण:** आधुनिक समय में भारतीय मां महिला सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन गई है। वह न केवल अपने परिवार की देखभाल करती है, बल्कि समाज में अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती है और अन्य महिलाओं को भी सशक्त बनाती है।

**9. मां और महिला सशक्तिकरण**

भारतीय मां आज के समय में महिला सशक्तिकरण की प्रतीक बन चुकी है। आधुनिक समाज में वह केवल अपने परिवार तक सीमित नहीं है, बल्कि वह सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक स्तर पर भी सक्रिय रूप से भाग ले रही है। इसका महत्व निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है:

1. **शिक्षा और आत्मनिर्भरता:** भारतीय मां आज अपनी शिक्षा और आत्मनिर्भरता को प्राथमिकता दे रही है। वह स्वयं पढ़ाई कर रही है और अपने बच्चों को भी उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित कर रही है।
2. **समाज में योगदान:** मां आज के समय में समाज सुधार और विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। वह स्वयं सहायता समूह, गैर-सरकारी संगठनों, और समाज सेवा के कार्यों में संलग्न होकर समाज में सकारात्मक बदलाव ला रही है।
3. **राजनीति में भूमिका:** भारतीय राजनीति में भी अब मांओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। कई महिलाएँ, जो मां भी हैं, राजनीति में सक्रिय हैं और देश के विकास में योगदान दे रही हैं।

**10. भारतीय मां का वैश्विक परिदृश्य में स्थान**

वैश्वीकरण के इस युग में भारतीय मां का महत्व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी देखा जा सकता है। भारतीय मां का त्याग, समर्पण, और शक्ति केवल भारतीय समाज तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसका प्रभाव अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अनुभव किया जा रहा है। प्रवासी भारतीयों के बीच

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

भारतीय मां की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, जहाँ वह अपने बच्चों को भारतीय संस्कृति, भाषा, और परंपराओं से जोड़े रखने का कार्य करती है।

1. **प्रवासी भारतीयों के बीच मातृत्व:** विदेशों में बसे भारतीय परिवारों में भारतीय मां की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। वह अपने बच्चों को भारतीय संस्कृति, भाषा और परंपराओं से जोड़े रखती है, साथ ही वह उन्हें अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा और समाज के लिए भी तैयार करती है।
2. **मां का वैश्विक दृष्टिकोण:** भारतीय मां अब एक वैश्विक नागरिक के रूप में देखी जा रही है। वह अपने बच्चों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा और चुनौतियों के लिए तैयार करती है, साथ ही उन्हें अपनी जड़ों से भी जोड़े रखती है।

**11. भारतीय मां के समक्ष भविष्य की चुनौतियाँ**

भविष्य में भारतीय मां के समक्ष कई चुनौतियाँ होंगी, जिनका समाधान करना आवश्यक है। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए मां को सामाजिक, आर्थिक, और मानसिक रूप से तैयार रहना होगा।

1. **आधुनिक जीवन की जटिलताएँ:** तकनीक और वैश्वीकरण के साथ, भारतीय मां को नई चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, जैसे कि बच्चों की देखभाल में डिजिटल और सोशल मीडिया का प्रभाव, कार्य-जीवन संतुलन बनाए रखना, और बदलते सामाजिक ढाँचों के साथ सामंजस्य बिठाना।
2. **महिला स्वास्थ्य:** मां के रूप में महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति ध्यान देने की आवश्यकता होगी, क्योंकि आज के व्यस्त जीवनशैली में महिलाएँ अपनी स्वास्थ्य समस्याओं को नजरअंदाज करती हैं।
3. **महिला सशक्तिकरण का सतत विकास:** भविष्य में भारतीय मां को महिला सशक्तिकरण की दिशा में और अधिक कदम उठाने होंगे। इसके लिए उसे न केवल स्वयं सशक्त होना होगा, बल्कि अपने बच्चों, खासकर बेटियों को भी आत्मनिर्भर और सशक्त बनाना होगा।

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

## 12. निष्कर्ष

भारतीय मां का व्यक्तित्व बहुआयामी और अद्वितीय है। वह केवल एक परिवार की देखभाल करने वाली नहीं, बल्कि समाज, संस्कृति, और धर्म की आधारशिला भी है। भारतीय मां का योगदान विभिन्न रूपों में देखने को मिलता है, चाहे वह पारिवारिक भूमिका हो, सामाजिक जिम्मेदारियाँ हों, या फिर आर्थिक और सांस्कृतिक धरोहरों को आगे बढ़ाने की बात हो।

समय के साथ भारतीय मां की भूमिका में बदलाव आया है, लेकिन उसका मूलभूत सार वही रहा है - प्रेम, त्याग, और समर्पण। आज की आधुनिक भारतीय मां न केवल अपने पारिवारिक दायित्वों को निभा रही है, बल्कि वह समाज, राजनीति, और अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। वह अपने बच्चों को शिक्षित और सशक्त बना रही है, उन्हें नैतिक मूल्यों से जोड़ रही है, और समाज में अपनी पहचान बना रही है।

भारतीय मां का यह बहुआयामी व्यक्तित्व भविष्य में भी समाज के विकास और उसकी नैतिक संरचना को सुदृढ़ करने में योगदान देता रहेगा। चाहे वह परिवार की देखभाल हो, समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी हो, या फिर उसकी आध्यात्मिक शक्ति - भारतीय मां सदैव एक शक्तिपुंज के रूप में कार्य करती रहेगी, जो आने वाली पीढ़ियों को मार्गदर्शन और प्रेरणा देती रहेगी।

## संदर्भ ग्रंथ सूची


1. गोस्वामी, तुलसीदास (2000). रामचरितमानस. वाराणसी: गीता प्रेस।
2. विवेकानंद, स्वामी (1995). महान भारत और मातृत्व की महत्ता. कोलकाता: अद्वैत आश्रम।
3. महात्मा गांधी (1948). मां और समाज का योगदान. अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन।
4. सरस्वती, स्वामी दयानंद (1883). सत्यार्थ प्रकाश. मुंबई: सत्यार्थ प्रकाशन।
5. शर्मा, सीता देवी (2010). भारतीय मातृत्व का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व. नई दिल्ली: शिक्षा भारती प्रकाशन।

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

6. आयर, लक्ष्मी (2008). भारतीय महिलाएँ और उनका वैश्विक प्रभाव. कोलकाता: दक्षिण एशियाई प्रकाशन।
7. एनसीईआरटी (2020). शिक्षा और मातृत्व: समाज सुधार में योगदान. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।
8. पांडे, प्रदीप कुमार (2015). मां: भारतीय समाज की धुरी. वाराणसी: ज्ञान भारती प्रकाशन।
9. सिंह, योगेंद्र (2018). महिला सशक्तिकरण और भारतीय मां. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
10. दुबे, शारदा (2005). भारतीय समाज में मां की भूमिका. भोपाल: मैकमिलन इंडिया।

SKU SHODH SANCHAR शोध संचार